अबद्ध

दीपक

BlueRose ONE .com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Deepak 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-825-1

Typesetting: Manisha Rawat

First Edition: April 2026

शीशा था ही नहीं

वो एक, दो थे

दो समुद्र, एक थे

पानी का बँटवारा हो तो कैसे हो

अदम्य मुराक़बा को समर्पित

सोनी नरवाल **डॉ मोनिका छिक्कारा**

एक लड़की ऐसी भी जिसने दायरों के दरिया की भी बाँध बनाई और आज़ादी से अपने बहाव को ऐसा समेटा कि बहाव बीच में था, समुंदर बेड़ियों में।

" लहू की रही है हर कलम की कोम
उसकी आंखें नम में गम नहीं
पिता की मृत्यु कोई पुर्नजन्म नहीं "

अ से बद्ध तक का सफर

अ से आंचल कुछ इस तरह जुडा जैसे माँ शब्द पहला हो किसी नवजात का, यह प्रमाण है इस बात का कि टूटा पत्ता, मिट्टी का घड़ा जो भरा तो अस्तित्व हुआ पानी का वरना सिर्फ बहन और माँ का भेद रिश्ता है जुबानी का, तू मिला वहां जहां राख में फुल खिलते होंगे, गुलाब को कांटे कहाँ चुभते होंगे,

कांटे गुलाब हो तो वो महके ऐसा लाज़मी नहीं, तभी एक बद्ध का अबद्ध हो जाना कागज़ी नहीं

आमुख

क़ाबिलियत की क़ब्र से होते हुए जो मैं ख़यालों के ख़िलाफ़ गया
तो गुज़रा वक़्त गवारा नहीं हुआ

तभी

एक सक्षम इंसान की क्षमता में छुपी सक्षमता को निपुणता के भार
से जो सामर्थ्य के दर्शन हुए उसे

अबद्ध
के माध्यम से दर्शाया गया है।

क

क़ाबिलियत की क़ब्र

लिखाई की अंगड़ाई

ज्ञान का बुढ़ापा

मेरी नासमझ कलम

संस्कारों का अंतिमसंस्कार

दहलीज़ का दहेज़

जूतों के नंगे पाव

ख

ख़यालों के ख़िलाफ़

ख़ुद से ख़ुद तक

प्रेम-प्रयास

सूरतें तो ख़ूब हैं

मोल तोल

उम्र

बूंद का समुंदर

अड़ियल अकड़

पतझड़ पत्ते पर

बदलते लिबास

भी नहीं

फ़िक्र का जिक्र

नक़्श

औकात

मैं और तुम

कोख की पहली सांस

14 फ़रवरी

कहती रह अब

ग

गुज़रा वक़्त गवारा नहीं

बहरूपिया रुपया

यार का ख़रीदार

आँखें बंद हैं ना

शिक्षा की भिक्षा

बिना हाथ की मज़दूरी

आवारा तेंदुआ

पानी का रंग लाल

नील का पत्थर

एक चमार का बेटा

अबद्ध

घ

घनघोर की गहराई

अभी दफ़न है

अबद्ध के शेष खंडों में

क

क़ाबिलियत की क़ब्र

लिखाई की अंगड़ाई

मैं तब तब आऊंगा
जब जब तुम मेरे व्यक्तित्व पर आओगे

वो प्रलय
जो विनाश कर दे

वो दृश्य
जो आभास करा दे

तुमने मापा जिस कद को वो ऊँचाई ही नहीं

मान लिया तुम समझदार हो

लेकिन तुम्हें समझ आ जाये
वो मेरी लिखाई नहीं

जब तुम मिल जाओगे ख़ुद से बिना रूसवाई के
उस दिन काबिल बन जाओगे मेरी लिखाई के

ज्ञान का बुढ़ापा

उम्र बढ़ाने में भी मेहनत लगी होगी
तजुर्बा तो उम्र की पूँजी है
लेकिन
कुछ लोगों की उम्र का तजुर्बा बस एक कुंजी है

बुढ़ापे का सम्मान संस्कार हो सकता है
मैं आप में बस ज्ञान को देखूँ ये भी हो सकता है

ज्ञान उम्र का मोहताज हो
बुढ़ापे के सर पर ताज हो
झुकना शौक हो
बेटी मारने पे ना कोई रोक हो
मूछों पे ताव हो

चाहे लटके कब्र में पाँव हो
सिर्फ लठ्ठ से ही घाव हो
अब तो मान जाओ चौधरी साहब
चौधर और साहब साथ-साथ नहीं चलता
चौधर तो पुश्तैनी है
और साहब बनने के लिए तो पढ़ना पड़ेगा

फिर तो उम्र बढ़ाने में बड़ी मेहनत लगी होगी
उम्र बढ़ाना शरीर की और बुद्धि की दोनों ही बहुत अलग बात है

मेरी नासमझ कलम

समझ से समझदारी मुबारक तुमको
हम तो किताबों का शौक रखते हैं

हर जवाब है आपके पास
पढ़े लिखें मालूम होते हो

पी.एच.डी कर रखी है आपने तो बोलने में
सुनना है ही नहीं किसी को, इस बात का भी मान रखते हो

हम तो ठहरे सवाल पूछने वाले
किताबों के सहारे खुद को जानने वाले

क्या कहा सिलेबस

मुझे लगा हम किताबों पे चर्चा करेंगे

अब तो चाय रहने ही दो

संस्कारों का अंतिमसंस्कार

जीवन दिया जिसने
उसी को जीव बोलते हो

बढ़ा-चढ़ा कर बात नहीं करता मैं
फिर मुझे क्यों कवि बोलते हो

माँ बोली
बोलने से क्या ही हो जाएगा
जब बोली घर की लगती है
उस समय ग़रीबी बहुत भोली लगती है
जो ज़ुबान बहुत तेज चलती थी
आज वो निकली तो गोली लगती है

माँ का ग़ुलाम था
तो
सिर कटवाना था

तेरी ही धरती पे स्कूल बना
पर
तू शिक्षा से वंचित है

कौन सी माँ की बात हो रही है
अगर ये सोचना पड़ रहा है तो

अभी तू

किताब ख़रीदने लायक़ ही पैसे कमा पाया है

दहलीज़ का दहेज़

एक पिता की पगड़ी का मान
बेटी के ब्याह में

उसके चरित्र की शान
पति के हाथ में

बेटी जैसी बहू है
सासू माँ के बोल

भाभी सामान नहीं
माँ के समान है
देवर की सोच

मुझे एक दोस्त मिल गई
कंधे पे हाथ रख के बोली
चलो
ननंद की पहुँच

दहेज़ रह गया

अच्छा ख़ासा मिला है तभी तो ऊपर वाली बातें बोली गई हैं

जूतों के नंगे पाव

घाव उनके और गहरे हैं
नंगे पाव वालों से
जिनके जूते फटे हुए हैं

मैं मोची से सिलवा तो लू
मगर वो घाव नहीं सीता

ख

ख़यालों के ख़िलाफ़

ख़ुद से ख़ुद तक

ख़ुद से ख़ुद को जानके ख़ुद ही को ख़ुद से ख़ुद समझना पड़े

तो

ख़ुद का ख़ुद को समझने से ख़ुद का विश्वास ख़ुद पर से
ख़ुद ही उठ जाएगा

प्रेम- प्रयास

प्रेम का प्रयास करना
या
प्रयास करके प्रेम करना

प्रेम है
या
प्रयास है

जो है ही वो क्या करना
या
वो ही करना जो है

अब तू है
उसके लिए प्रयास करूँ
या उससे प्रेम करूँ

तू प्रेम है
तो उसका प्रयास कैसा
अगर प्रयास किया तो
प्रेम कैसा

मशरूम से मेरी रूह
तक
का प्रयास

और
एक प्रेम का लिबास
कभी
सिला नहीं गया

मगर तू है

तो

प्रेम का इतिहास
और
प्रयास का लिबास

तेरी बाहों में
सिमट जायेगा

सूरतें तो ख़ूब हैं

ख़ूब सारी सूरतों में वो ही ख़ूबसूरत है
मगर
जब देखा उसको ख़ूब
तब
उसकी सूरत पर सबने ’ख़ूब’ कहा

मोल-तोल

तुझे क़ैद करूँ
या
तेरे पर काट दूँ

पिंजरा सोने का है
मसला तुझे खोने का है

तू बोल तुझे क्या चाहिए

आज़ादी

ये मेरे प्रेम से बड़ी कोई चीज़ है क्या
या सोने से महंगी
ये तो कहीं मिलती भी नहीं है
इसका कोई मोल ही नहीं है

सही कहा
इसका कोई मोल ही नहीं है

उम्र

सदियों की उम्र गुज़ार दी
उसके एक ख्वाब में
लगता था जिंदगी कुछ बयाँ करेगी
कर्मों के हिसाब से

मेरा जाना, उसका आना
इस जहां में
कुछ तो किया ही होगा
इस बहते लिबास ने

मुझे तू अपना ही समझ
गहरे आभास में

साँसों का आना-जाना चलता रहे बस

कुछ है ही नहीं विनाश में

वरना

कब का डुबो दिया होता ये जहां
तेरे झूठे किए हुए पानी के ग्लास में

बूंद का समुंदर

बूंद दरिया से बिछड़कर ही समुंदर हुआ
जो अपने आप में समुंदर था
वो उस बूँद के लिए दरिया हुआ

अड़ियल अकड़

गुरूर के सुरूर का गुरूर हम हैं
सुरूर में गुरूर
गुरूर का सुरूर
सुरूर के गुरूर को
गुरूर के सुरूर का
जो गुरूर है
इसीलिए
है में सुरूर है
'मैं' में गुरूर है
तभी
तो
हम दोनों अलग हैं।

पतझड़ पत्ते पर

पत्ते-पत्ते पर लिखा है उसके पते का नाम
पतझड़ से पहले ढूँढ लेना

पता तो दूर की बात है
वरना पत्ते का भी नहीं पता चलेगा

बदलते लिबास

आस के पास भी आस नहीं है
स्वास पे अब विश्वास नहीं है

बदलते लिबासों में कैसे पहचानूँ
ख़ामोशी को सुनू

या

तुझे

भी नहीं

माना
तलब है मुझे उसके जिस्म की
मगर
हर ख्वाहिश मुकम्मल हो
इसमें बेपर्दगी बिल्कुल भी नहीं

हिज्र के सामने दिखाई क्या ही देगा
माशूक़ा से बेवफाई है
ख़ातून का मसला भी नहीं

हवस का दौर है, जिस्म का सौदा
उसकी
इसमें कोई कमाई भी नहीं

मेरा उसके साथ एक बिस्तर पर होना
बस एक इत्तफाक ही है
इसमें
किसी की भलाई भी नहीं

मैं सिलवटें गिनता रहा सारी रात सुबह आँख खुली तो
उसकी परछाई भी नहीं

फ़िक्र का जिक्र

वो बता कर चला गया
मुझे फ़िक्र हुई

उसके पते का पता, पता कर पाता उससे पहले
एक लिफाफे में मेरे पते पे किसी ने उसका पता भेज दिया
फिर मुझे

ओर ज्यादा फ़िक्र हुई

ढूँढना उसको जो ढूँढवाना खुद को चाहता है
भला वो कैसे गुम हो जाता है

फिर भी
मुझे फ़िक्र हुई

उसको ढूँढते-ढूँढते धुँध जम गई इन आँखों पे
ना मिलने की आस में और इस ओस में
इन आँखों की आस के पास की आस को भी ओस की बूँदों की तरह टपका दिया

फिर

मुझे सही में फ़िक्र हुई

नक़्श

उनकी आँखों का रंग
ढूँढ़ते-ढूँढ़ते

कब हम हमसे उनके हो गए
कब हम उनसे उनके होते-होते रह गए
कब हम उनके होने से उनका होना

बस

इसी असमंजस में
जब उनके छूने से हममें छूने की चाहत जगी

तब

लबों को छूने की चाह में
साँसें उखड़ गई इस क़दर
कि अब उनका मेरे साथ होना भी मुझे नहीं बचा पायेगा

औकात

तेरे-मेरे हाथों की लकीरों में जो वक़्त का सिक्का
टूटा पड़ा है

वो ख़र्च मत करना

मैं और तुम

तुम्हें जाने दिया
क्योंकि
तुम्हें तुमको छोड़ना था
मेरे में मैं था
जो इस बात से परिचित था
भले तुम ख़ुद को पा लो
लेकिन इस लम्हे को हमेशा ज़हन में रखना
आसां नहीं था मेरे मैं से बग़ावत करके
तुम्हें जाने देना
तुम्हें तुम्हारे 'तुम' तक मिलने के वक़्त में
मेरे 'मैं' ने जो मेरे को खो दिया
अब मेरे का 'मैं' और तुम्हारे का 'तुम'
आज़ाद है
अनजान है

क्योंकि
तुम्हें 'तुम' को छोड़ना था

कोख की पहली सांस

तू मेरे समीप है
जैसे लक्ष ओर अंडमान

सूरज से चाँद मिले
तो
पिंघलेगा थोड़ी

तू सांस ले और छोड़ मत
इसमें
कोई बरगद मरेगा थोड़ी

मेरी माँ की कोख ने मुझे जन्म दिया
मैं साँसें छोड़ तो दू तेरे लिए
मगर कोख को कोई समझाएगा थोड़ी

हाँ, माँ आया

14 फ़रवरी

तुम हाथों से
लकीर
पूछ के आना

तूम ऊँचाई से गहराई
पूछ के आना

तुम किनारों से समुंदर
पूछ के आना

तुम मजबूरी से मजबूर
पूछ के आना

तुम ख्वाबों से ख्याल
पूछ के आना

तुम बगावत से समझ
पूछ के आना

तुम आस से मेरी माँ
पूछ के आना

तुम बहू से बेटी के बाप के बेटे की शेरवानी का रंग पूछ के आना

दिशा से उँगलियाँ
पूछ के आना

उस सोने की खदान
से
हम अब अनजान
मेरी जान से अब जान पूछ के आना

तुम ना आना
फिर
तुम आना

लेकिन
ख़ुद को लेके आना
और जब मिलो मुझसे
उसके बाद खुद को लेके जाना

और पूछना ख़ुद से
कि वो कहाँ है
तब तुम्हें सुनाई
देगा

कि

तुम फिर आना
और

इंतज़ार तुम भी करना मेरा उस मोड़ पे, बिछड़े थे रास्ते कहीं

आवाज़ लगाना दौड़ना, तड़पना, तिलमिलाना और देखना तुम्हें मिलूँगा नहीं

फिर, तुम आना

कहती रह अब

वो कहती
मेरे लिए मर सकता है क्या

अब वो कह रही
है
साँस तो ले ले

ऊपर से आवाज आयी

....

शीर्षक दोबारा पढ़ना

ग

गुज़रा वक़्त गवारा नहीं

बहरूपिया रुपया

1 रुपया 2 रुपया 3 रुपया
जब मांगा जहाँ से
सारा जहाँ बहरूपिया

ये किया बहुत किया
तेरे लिए क्या ना किया
एक भी रुपया नहीं था जब मेरे पास
भारी पड़ा मेरी आशिक़ी पे एक रुपया

अब 1 लाख 2 लाख 3 लाख
उसकी ’ना’ मेरी ज़िन्दगी में बची को शाख़
मेरी हथेली में जमी है उसके वादों की राख

1 करोड़ 2 करोड़ 3 करोड़
टूट गई यहाँ इश्क़ की मरोड़

3 करोड़ तक का सार
मगर
नहीं सह सका मेरा पुराना दोस्त
उस एक रूपये की मार

यार का ख़रीदार

8 साल की उम्र में ही
मेरे तराज़ू में पैसे थे

पैसा कभी समझ में आया ही नहीं
शायद इसीलिए मेरी जेब में पड़ा रहा

जब हाथ डाला ठंड में जेब में तब पता चला
गर्मी
क्या होती है

खून खरीदा जब पैसों में
तब पता चला महंगा क्या होता है

पैसों से

जिनकी नज़र उतारी उनकी भी नज़र ना लग पायी
क्योंकि उनके दिमाग में पैसा है
मेरी जेब में पैसा है

मेरी जेब की गहराईयों को मेरी सोच से मापा जाये

सोच को मेरी लिखाई से
लिखाई को मेरी कमाई से
कमाई को मेरे ठहराव से
ठहराव को चरित्र से

तभी एक आवाज आई
मेरे मित्र की
चरित्र को पैसे से

फिर मैंने वो मित्र खरीद लिया

अब एक जेब में पैसा है
एक में मित्र है

अब उम्र 80 साल है
और दोनो जेबों में पैसा है

आँखें बंद हैं ना

मैं मेरे अंदर का दीपक लेके चला
32 साल तक चला

इस बार मैंने साँसें नहीं, लहू डाला है इसमें
इस दीपक ने अब मुझे ही जला दिया है

अब बस यही ज्वालामुखी है

उसको फूटता देखने के लिए भीड़ जमा है
मुझे लगा ये भीड़ दीपक को देखने आई है

कि

ये बिना हवा के कैसे बुझ गया

लेकिन विनाश चाहे प्रकृति का हो
या संस्कृति का
भीड़ जमा हो ही जाती है

कहाँ था मैं

मैं मेरे अंदर का दीपक लेके चला

अब दीपक के लौ में लावा है
और लावे में दीपक की ज्योति

आँखें बंद है ना

शिक्षा की भिक्षा

तू जा ना
तू जा के देख
एक काम कर
तू जा के दिखा
सोचियो भी मत जाने की

अभी तक यहीं खड़ा है

यहाँ शिक्षा सिर्फ उच्च वर्ग को मिलती है

बिना हाथ की मज़दूरी

हक मांगा तो हथेली का पता चला
सवाल पूछा तो उंगली का पता चला
नारे लगाये तो मुट्ठी का पता चला
हाथ जोड़े तो धर्म का पता चला
हाथ खोले तो बौद्ध का पता चला
हाथ उठे तो आज़ादी का पता चला
हाथ कटे तो जाति का पता चला

अब आज़ाद है
लेकिन मैं हाथ नहीं मिला सकता

आवारा तेंदुआ

सब्जियों में टमाटर फ्रूट है
दलित निम्न वर्ग में आते हैं
ये बात झूठ है

आँखों पे चश्मा सूरज से बचाव
हमारे लोग दिल्ली पहुँचे थे नंगे पाँव
दिल पे घाव, हल्दी का मरहम
दलितों के घाव पे नमक का ज़ख़्म

सरहद खत्म, देश का बँटवारा
हम संख्या में ज़्यादा
फिर भी सीटों पे नागवारा
आरक्षण का सहारा
आर या पार के क्षण पे पढ़ रहा है बच्चा हमारा

योग्य नहीं है इस कुर्सी के
हमें नहीं ये गवारा

अब बिल्लियाँ बता रही हैं तेंदुए को आवारा

पानी का रंग लाल

पानी जितना लहू बहाया है
फिर भी कुओं से पानी नहीं मिला

मरने तक जानवरों जैसा हल चलाया है
फिर भी खाने को अनाज नहीं मिला

किसी का मटका सिर पर नाच की निशानी है
किसी के गले में मटका थूकने को आसानी है

धनतेरस पे झाड़ू खरीदना
ताकी पीठ पर बांध सकूँ

तब मेरे निशान मिटाए गए थे
अब मैं आसमान पे चलता हूँ

माफ़ कर दिया है बहुत पहले
अब तो जंग बस इस बात पर है

कि

काम के नाम पर नहीं
दाम के दम पर
लोग ख़रीदे और बेचे गए हैं

गली का कुत्ता कंबल में
लोगों का संघर्ष चम्बल में

जिनकी ख़ुद की नसल नहीं

उनकी नक्सलवाद पे टिप्पणी

दलितों के लिए काशी का राम बड़ा होता

अगर

कांशी राम ना होता

काश काश

में

जीवन निकल गया कांशी राम का

पूरे दिन की दिहाड़ी में खाना नहीं जोड़ पा रहा शाम का

शिक्षा से आत्मा का मिलन

या शिक्षा के संस्थान पर

आत्महत्या

पानी जितना लहू बहाया है

बस

पानी जितना लहू बहाया है

नील का पत्थर

बाबाओं का डर
लोगों में

साहब का डर
नौकरों में

बाबा साहब का डर
स्वर्णों में

'मैं' में हार है ही नहीं
क्योंकि
महार है

जाति जाती जाएगी ये जाति
ये कहना ना पड़े
इसलिए संविधान लिख दिया

ज़िंदगी में लॉ आ गया
तभी 32 डिग्रियों में 100 आ गया

नारियों का घर में बाई बनना
या पत्नी के रूप में रामा बाई बनना

पसीने के बाद जो थूका गया है
किसी मज़दूर की बात नहीं
बच्चियों की आबरू के शरीर के धब्बे हैं ये

छुआछूत
सही जिसने
उन्हीं के आरक्षण को छूट बोलते हो
छू भी नहीं पाओगे उन ऊँचाइयों को
एस.सी का लड़का अफ़सर बन गया
इस बात को झूठ बोलते हो

हमारी माँओं की छाती पे टैक्स लगाया
क्योंकि दूध का भार

इन शेरों को जो पाल रहा था

एक चमार का बेटा

मेरे लिबास से ना मापा जाये मुझे
देखो

नीली स्याही में लीन मेरी उंगलियां

किसी फैक्टरी का रंग नहीं
काग़ज़ पे जख्म लिखते हुए ....

मैं बेटा एक चमार का हूँ
लेकिन मुझे चमड़े की बेल्ट का कोई शौक नही

घोड़ों के पाँव में नाल
मेरे शरीर की खाल
एक ही धातु की है अब

चाबुक का असर अब सुन्न नहीं करता शरीर को
अब बिना डरे देख लेते हैं गर्दन पे रखी शमशीर को

किताबें आ गई हाथ में तो उंगलियां स्याही में
वरना जंगल के जंगल काटने पड़ते चिता जलाने के लिए
इतना विद्रोह लिख देता अपनी लिखाई में

अबद्ध

मेरे अंदर वो ऐसे चिल्लाया

नहीं सुनाई दिया ना

घ

घनघोर की गहराई

अभी दफ़न है

अबद्ध के शेष खंडों में